पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.03.2019 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

शहीद भगतसिंह राजगुरू, सुखदेव के बलिदान दिवस पर **"राष्ट्र रक्षा यज्ञ"** शनिवार, 23 मार्च 2019, प्रातः 11 से 1.00 बजे तक स्थानःजन्तर मन्तर,नई दिल्ली

वर्ष-35 अंक-19 फाल्गुन-2075 दयानन्दाब्द 195 01 मार्च से 15 मार्च 2019 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.03.2019, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

भारतीय सैनिकों पर पुलवामा में हुए हमले के विरूद्व जन्तर मंतर पर प्रदर्शन

आंतकवादियों व उनके संरक्षकों का समूल नाश आवश्यक – आर्य नेता अनिल आर्य

भारतीय सेना के पाक आंतकवादी शिविरों पर हमले से देश भर में प्रसन्नता की लहर

वीरवार 14 फरवरी 2019 को पुलवामा (कश्मीर) में हुए आंतकवादी हमले में भारतीय सेना के 42 जवानों का बलिदान हो गया,जिसकी हर और कड़ी निन्दा की जा रही है। अगले ही दिन शुक्रवार 15 फरवरी 2019 को नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली ने प्रचण्ड विरोध प्रदर्शन किया और केन्द्र सरकार से मांग की कि आंतकवाद की जननी पाकिस्तान को मुहॅ तोड़ जवाब दिया जाये,प्रधानमन्त्री व केन्द्रीय गृहमंत्री को ज्ञापन भी दिया गया। आर्य समाज के अलावा युनाइटेड हिन्दु फ्रन्ट,विश्व हिन्दु परिषद्, हिन्दु सेना,अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा व कालेजों के छात्र–छात्रायें भी भारी संख्या में उपस्थित थे सभी में इस कायराना हमले के विरूद्व गहरा रोष था, हर और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लग रहे थे,शहीदों के खून का बदला खून से लो। परिषद के प्रदर्शन को आज तक,एबीपी न्यूज, जी न्यूज आदि कई चैनलस व समाचार पत्रों ने कवर किया। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में महामंत्री महेन्द्र भाई, देवदत आर्य, अरूण आर्य, शिवम मिश्रा, विवेक अग्निहोत्री,वरूण आर्य, शिवा टांक, वेद खट्टर, विजय सब्रवाल, प्रवीन आर्या, देवेन्द्र गुप्ता, प्रवीन आर्य आदि साथियों सहित शार्ट नोटिस पर जन्तर मंतर पर पंहुचे और अपने राष्ट्र धर्म का पालन किया। यदि सभी अपने कर्तव्य का पालन करते तो संख्या हजारों में हो सकती थी लेकिन सभी व्वाटस अप और फेस बुक पर भड़ास निकाल कर कर्तव्य श्री मान लेते है।

शुक्रवार, 15 फरवरी 2019, नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर विश्व हिन्दु परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री आलोक कुमार,अनिल आर्य,अरूण आर्य आदि प्रदर्शन में नारे लगाते हुए। प्रमुख रूप से राष्ट्रवादी शिव सेना के जयभगवान गोयल,विष्णु गुप्त,सन्दीप आहुजा,बच्चन सिंह आदि भी उपस्थित रहे।

परिषद् का राष्ट्रीय युवक निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली का राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर शनिवार, 8 जून से रविवार, 16 जून 2019 तक लगेगा । सभी आर्य युवक तिथियां नोट कर लें,स्थान की घोषणा अगले अंक में की जायेगी । सभी प्रान्तीय अध्यक्ष व जिला अध्यक्ष अपने अपने शिविरों की तिथियां शीघ्र निश्चित कर सूचित करें

—अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, 011.42133624 निवास

गुरूकुल खेड़ाखुर्द 31 मार्च को आओ

दिल्ली देहात के सुप्रसिद्व गुरूकुल,खेड़ाखुर्द का वार्षिकोत्सव रविवार, 31 मार्च 2019 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक मनाया जायेगा । सभी आर्य जन अपनी समाजों से बसें लेकर भारी संख्या में पंहुचे,यहां पर बीमार गायों के लिये गऊशाला भी चलती है अपना पवित्र योगदान अवश्य प्रदान करें।

—ब्रह्मप्रकाश मान, प्रधान — मनोज मान, मन्त्री

6 मार्च बलिदान दिवस पर : रक्त–साक्षी पं. लेखराम आर्य मुसाफिर

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

पं. लेखराम आर्यमुसाफिर के नाम से आर्यसमाज का प्रत्येक अनुयायी परिचित है। 6 मार्च, सन् 1897 को उनका लाहौर में वैदिक धर्म की वेदी पर बलिदान हुआ था। उनके बलिदान का कारण था कि वह वैदिक धर्म के प्रचारक तथा व आर्य हिन्दुओं के रक्षक थे। यदि अविभाजित पंजाब सहित कहीं किसी वैदिक धर्म के अनुयायी का धर्मान्तरण होता था तो पं. लेखराम जी वहां पहुंच कर धर्मान्तरण करने वाले अपने भाईयों को समझाते थे और उन्हें अपने धर्म की विशेषताये बताकर धर्मान्तरण न करने की प्रेरणायें करते थे। आपने सहस्रों लोगों को धर्मान्तरित होने से बचाया। वैदिक धर्म के इतिहास में आप सदैव अमर रहेंगे। पं. लेखराम जी का जन्म पंजाब के झेलम जिले के ग्राम सैदपुर में सारस्वत ब्राह्मण कुल में हुआ था। आपकी जन्म तिथि चैत्र महीने की सौर 8 तथा वर्ष विक्रमी 1915 है। आपके पिता का नाम महता तारासिंह था। बाल्यकाल में आपको केवल उर्दू व फारसी की शिक्षा प्राप्त हुई। आपकी यह शिक्षा आपके भावी जीवन में इस्लाम मत के ग्रन्थों का अध्ययन करने में काम आयी। अपने बाल्यकाल से आप कुशाग्र बुद्धि के बालक थे तथा उर्दू–फारसी में कविता लिखने की ओर आपका झुकाव था। आपके चाचा पंडित गंडाराम पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर थे। उनके द्वारा आप पुलिस विभाग में सारजेन्ट के पद पर नियुक्त हुए। आप बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे और एकादशी का व्रत रखने के साथ गुरुमुखी भाषा में छपी गीता के श्लोकों का पाठ भी नियमित रूप से करते थे। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से पूर्व आप अद्वैतवाद अर्थात् जीव–ब्रह्म की एकता व समानता को मानते थे। आपमें वैराग्य का भाव तीव्र अवस्था में था। इन्हीं दिनों आपको लुधियाना के एक समाज सुधारक व धर्मप्रचारक पं. कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों के अध्ययन का अवसर मिला। इससे आपको ऋषि दयानन्द और उनके समाज सुधार के कार्यों सहित वेद धर्म प्रचारार्थ आर्यसमाज की स्थापना का ज्ञान हुआ। आपने अजमेर से आर्यसमाज का साहित्य मुख्यतः सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ मंगाकर पढ़े। इससे आपके विचार बदल गये और आप आर्यसमाज के अनुयायी व सदस्य बन गये। पं. लेखराम जी ने संवत् 1936 विक्रमी के अन्तिम भाग में सीमा प्रान्त के पेशावर नगर, जो मुस्लिम बहुल था, वहां आर्यसमाज की स्थापना की थी। पंडित लेखराम जी को धर्म विषय में कुछ शंकायें थी। इसके निवारण के लिये आपने महर्षि दयानन्द से मिलने का निश्चय किया। आप पुलिस की सेवा से एक महीने का अवकाश लेकर 17 मई, 1880 को पेशावर से अजमेर पहुंचे जहां ऋषि दयानन्द सेठ फतहमल की वाटिका में ठहरे हुए थे। इस स्थान पर आपने ऋषि दयानन्द के दर्शन किये तथा उनसे वार्तालाप वा शंका समाधान किया। यह आपकी ऋषि दयानन्द से पहली व अन्तिम भेंट थी।

स्वामी जी के दर्शन से आपके यात्रा के सभी कष्ट विस्मृत हो गये। ऋषि दयानन्द जी के सत्य उपदेश से आपके सभी संशय भी दूर हो गये। आपने ऋषि दयानन्द से 10 प्रश्न किये और उनके उत्तर सुने। इन उत्तरों से आपका समाधान हो गया। बाद में आप अपने 7 प्रश्नों व उनके ऋषि द्वारा दिए उत्तरों को भूल गये। शेष प्रश्नों व उनके उत्तरों को स्वयं प्रस्तुत किया है। आपकी पहली शंका थी कि ब्रह्म व आकाश दोनों सर्वव्यापक हैं। यह दोनों व्यापक पदार्थ एक ही स्थान पर एक साथ कैसे रह सकते हैं? महर्षि दयानन्द ने एक पत्थर उठाया और कहा कि जिस प्रकार इसमें अग्नि, मिट्टी और परमात्मा तीनों व्यापक हैं उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में परमात्मा और आकाश भी व्यापक हैं। ऋषि ने कहा कि सूक्ष्म वस्तु में उससे भी सूक्ष्मतर वस्तु विद्यमान रहती है। ब्रह्म सूक्ष्मतर होने से सभी पदार्थों में सर्वव्यापक है। पं. लेखराम जी ने लिखा है कि ऋषि से यह समाधान सुनकर मेरी तृप्ति हो गई। ऋषि द्वारा अन्य प्रश्नों को पूछने की अनुमति देने पर उन्होंने 10 प्रश्न पूछे थे। उनमें से तीन प्रश्न व उनके समाधान उन्हें याद रहे, शेष 7 प्रश्न व उनके समाधान उन्हें विस्मृत हो गये थे। ऋषि से किये 3 प्रश्न व उनके उत्तर हैं, प्रश्न–जीव ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइये। उत्तर–यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव और ब्रह्म का भेद बतलाता है। प्रश्न–अन्य मतों के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए वा नहीं? उत्तर–अवश्य शुद्ध करना चाहिए। प्रश्न–विद्युत क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न होती है? उत्तर–विद्युत सब स्थानों में है और घर्षण वा रगड़ से पैदा होती है। बादलों की विद्युत भी बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

अजमेर से लौटकर पं. लेखराम जी ने ''धर्मोपदेश'' नाम के एक उर्दू मासिक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन किया। इसके माध्यम से उन्होंने वैदिक धर्म के सत्यस्वरूप व उसकी महत्ता का पठित लोगों में प्रचार किया। इसके साथ ही आप मौखिक व्याख्यान भी दिया करते थे। इसी बीच पंडित लेखराम जी को किसी अन्य थाने में स्थानान्तरित कर दिया गया। इसके पीछे उनके अधिकारियों की उन्हें परेशान करने की मन्शा भी थी। पं. लेखराम जी ने इस समस्या से स्वयं को मुक्त करने के लिये 24 जुलाई सन् 1884 को पुलिस विभाग की सेवा से त्याग पत्र दे दिया। इससे उन्हें आर्यसमाज के काम उपस्थित होने वाली सभी बाधाओं से मुक्ति मिल गई और वह पूरा समय वैदिक धर्म के लिखित व मौखिक प्रचार में व्यतीत करने लगे। इस बीच उन्होंने मुस्लिम लेखकों के वैदिक धर्म पर आक्षेपों का उत्तर लिखना भी आरम्भ किया। वह धर्म प्रचारार्थ व ऋषि जीवन की घटनाओं के संग्रह के लिये अनेक स्थानों पर जाने लगे जिससे उनका नाम 'आर्यपथिक वा आर्यमुसाफिर' पड़ गया।

अहमदिया सम्प्रदाय के मुसलमानों के प्रवर्तक कादियां के मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने एक पुस्तक 'बुराहीन–ए–अहमदिया' लिखी जिसमें आर्यसमाज पर कटु आक्षेप किये गये थे। पंडित लेखराम जी ने इस पुस्तक का उत्तर 'तकजीव बुराहीन–ए–अहमदिया' नामक ग्रन्थ लिख कर दिया जो अकाट्य तर्कों से पुष्ट था। मिरजा ने दूसरी आक्षेपात्मक पुस्तक 'सुर्म–ए–चश्म आरिया' लिखी जिसका उत्तर पंडित जी ने 'नुस्ख–ए–खब्त अहमदिया' लिखकर दिया। मिरजा ने यह घोषणा भी की थी कि उसके पास ईश्वर के दूत सन्देश लाते हैं। वह अलौकिक चमत्कार दिखला सकता है। वह अपने ईश्वर से प्रार्थना कर एक वर्ष के भीतर किसी भी मनुष्य को मरवा सकता है। पं. लेखराम जी ने मिरजा की इन सब बातों का कादियां जाकर खण्डन किया व उसे निरुत्तर कर दिया। इस विवाद के बढ़ने से कुछ समय बाद पं. लेखराम जी की हत्या हुई और वह धर्म की वेदी पर बलिदान हो गये।

पंडित जी धर्म रक्षा के कार्य को करने के लिए हर क्षण तत्पर रहते थे। कहीं धर्मान्तरण व शास्त्रार्थ की आवश्यकता हो तो पं. लेखराम जी उत्साहपूर्वक वहां पहुंचते थे और अपनी सारी शक्ति लगा देते थे। पं. लेखराम जी की विद्वता व वाक्पटुता का लोहा उनके सभी विरोधी मानते थे। वह अपनी युक्तियों से बड़े–बड़े मौलवियों तथा पादरियों को निरुत्तर कर देते थे। पादरियों का व्यवहार उनके प्रति बहुत अधिक कटु नहीं होता था। मुस्लिम विद्वान अपनी कट्टरता और तात्कालीन उत्तेजना का प्रदर्शन करते हुए मोहम्मदी तलवार की धमकियां देते थे। ऐसे आक्रमणों से पंडित जी कभी नहीं घबराये। उन्हें दी जाने वाली धमकियां का उत्तर वह यह कह कर दिया करते थे कि संसार में धर्म शहीदों के रुधिर से ही फूले फले हैं और मैं अपनी जान हथेली पर लिये फिरता हूं। पंडित जी ने बहुत से सनातनधर्मी सम्भ्रान्त व समृद्ध कुलों के युवकों को धर्मभ्रष्ट होने से बचाया था। मुजफफरनगर जिले के जाट रईस चौ. घासीराम और सिन्ध के रईस दीवान सूरज मल व उनके दो पुत्रों को भी उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने से बचाया।

आर्यपथिक पंडित लेखराम जी एक निःस्पृह, साधु, त्यागी और सन्तोषी प्रवृत्ति के ब्राह्मण थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब से वह मात्र 25 रुपये लेकर रात दिन वैदिक धर्म की सेवा में व्यस्त रहते थे। बाद में उनका मासिक वेतन रात दिन उनके पुरुषार्थ को देखकर बिना उनके कहे 25 से बढ़ाकर 35 रुपये कर दिया गया था। उनका गृहस्थ जीवन सभी उपदेशकों व ब्राह्मण वर्णस्थ बन्धुओं के लिए अनुकरणीय था व है। पंडित जी शास्त्र पर्णित रुद्रसंज्ञक ब्रह्मचारी की अवस्था को प्राप्त करके 36 वर्ष की आयु में विक्रमी संवत् 1950 के ज्येष्ठ महीने में मरी पर्वत के 'भन्न ग्राम' की निवासी कुमारी लक्ष्मी देवी जी के साथ विवाह किया था। विवाह के बाद आपने अपनी पत्नी को पढ़ाना आरम्भ कर दिया था। ग्रीष्म काल विक्रमी संवत् 1952 में उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नामकरण संस्कार वैदिक रीति से हुआ और बालक का नाम 'सुखदेव' रखा गया। पंडित जी वैदिक धर्म प्रचार में इतने व्यस्त हो जाते थे कि उन्हें अपनी पत्नी व पुत्र का ध्यान नहीं रहता था। वह चाहते थे कि उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी उपदेशिका बनकर उनके साथ धर्मप्रचार करें। इसलिये वह अपनी पत्नी व पुत्र को भी धर्म प्रचारार्थ साथ में ले जाने लगे। उनका पुत्र बहुत छोटा था। वह यात्रा के कष्टो को सहन नहीं कर सका और रुग्ण होकर डेढ़ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो गया। पंडित जी ने धैर्य से इस पुत्र वियोग के दुःख को सहन किया और वैदिक धर्म का प्रचार निरन्तर करते रहे।

महर्षि दयानन्द का 30 अक्टूबर सन् 1883 को अजमेर में बलिदान हो गया था। उनका सर्वांगपूर्ण जीवन चरित लिखे जाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। यह दायित्व आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने पंडित लेखराम जी को दिया। पंडित जी ने उन सभी स्थानों पर जाकर जहां–जहां ऋषि दयानन्द जी गये थे, उनके जीवन की घटनाओं का अन्वेषण किया और जिन पुरुषों का ऋषि से वार्तालाप तथा उपदेशों आदि में साक्षात्कार हुआ था, उनसे मिलकर उनके बताये वर्णनों को उन्हीं के शब्दों में लिखवा कर संग्रह किया। पं. लेखराम जी ने ऋषि जीवन ग्रन्थ की पूरी सामग्री एकत्र कर ली और जीवन चरित का लेखन आरम्भ किया। इससे पूर्व की वह पूरा जीवन चरित लिख पाते एक आततायी मुस्लिम युवक ने उनकी हत्या कर दी। ऋषि की मृत्यु तक का वृतान्त वह पूरा लिख चुके थे। पं. लेखराम जी द्वारा संग्रहित सामग्री व उनकी लेखनी से लिखा गया यह ऋषि जीवन चरित्र आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द का सर्वोत्तम जीवन चरित है। ऋषि के छोटे बड़े एक दर्जन से अधिक जीवन चरित्र उपलब्ध हैं परन्तु अनेक कारणों से इस ग्रन्थ का महत्व सर्वाधिक है। आर्य विद्वान पं. भवानी प्रसाद जी ने लिखा है ''पण्डित लेखराम जी संगृहीत महर्षि दयानन्द की जीवनी में साक्षियों के शब्द–प्रतिशब्द–मौलिक और लिखित वर्णन ऐतिहासक दृष्टि से बड़े बहुमूल्य हैं। उन से ऐतिहासिक अन्वेषक को ऊहापोहपूर्वक पक्षपात रहित सत्य पर पहुंचने में बड़ी सहायता मिलती है।'' पंडित भवानी प्रसाद ने पं. लेखराम जी के विषय में यह भी महत्वपूर्ण जानकारी दी है 'मोहम्मदी लोग पण्डित लेखराम से पहले ही से द्वेष रखते थे। उन्होंने उन पर दिल दुखाने और अश्लील लिखने के कई अभियोग मिरजापुर, प्रयाग, लाहौर, मेरठ, दिल्ली, बम्बई की फौजदारी अदालतों में दायर किये थे, किन्तु न्यायाधीशों ने पण्डित जी के लेखों में कोई बात भी आक्षेपयोग्य न पाकर उन की तलबी किये बिना ही उन सब अभियोगों को खारिज कर दिया। इससे मुसलमान (पंडित लेखराम जी से) और भी अधिक चिढ़ गये और धर्मवीर पर उन के रोष की सीमा न रही। उनकी ओर से पण्डित जी को वध की धमकियां आए दिन मिलने लगीं किन्तु पण्डित लेखराम भय का नाम ही न जाते थे। .... आर्यपुरुषों के सावधान करते रहने पर भी उन्होंने कभी अपनी रक्षा का प्रयत्न नहीं किया।'

पंडित जी के बलिदान की घटना का विवरण भी हम पं. भवानी प्रसाद जी के शब्दों में प्रस्तुत करना चाहते हैं। वह लिखते हैं 'अन्त को फरवरी सन् 1897 के मध्यभाग में एक काला, गठीले बदन का, नाटा मुसलमान युवक उन के पास आया और उन से अपने आप को हिन्दू से मुसलमान बना हुआ बतलाकर उस ने अपने शुद्ध किये जाने की प्रार्थना की। धर्मवीर तो पतितों के उद्धार और शुद्धि के लिए प्रत्येक क्षण कटिबद्धरहते थे। उन्होंने उस को प्रेमपूर्वक अपने पास बिठलाया और धर्मोपेदश देना प्रारम्भ किया। इस मनुष्य की आंखों में भयंकरता बरसती थी। कई पुरुषों ने उन को उस से सुरक्षित रहने के लिए भी चेतावनी दी थी किन्तु उन्होंने उस पर कुछ भी कान न दिया और उस को धर्मजिज्ञासु कह कर अपने हितैषियों की बात टालते रहे। एक दिन सायंकाल के समय उसी दुष्ट मुसलमान युवक ने अंगड़ाई लेते हुए पण्डित जी के उदर में, जब कि वे महर्षि दयानन्द जी की जीवनी में उन की परमपद–प्राप्ति के वर्णन का अध्याय अभी–अभी लिख कर उठे थे, कटारी भौंक दी, जिस से उन की आंतों में आठ मारक घाव लगे और उन से आधी रात तक बराबर रुधिर का प्रवाह बहता रहा। डाक्टर पेरी, सिविल सर्जन (लाहौर) के घावों को, दो घण्टे तक सीते रहने पर भी पण्डित जी न बच सके और उन्होंने फाल्गुन सुदि 3, संवत् 1953 विक्रमी तदनुसार 6 मार्च 1897 ई. को रात्रि के 2 बजे अपने नश्वर शरीर को वैदिक धर्म पर बलिदान कर दिया। प्राण त्यागने से पूर्व तक उन

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सुरक्षा वापसी के साथ अलगाववादियों के खिलाफ अन्य कदम भी उठाए जाएं

—अवधेश कुमार

सरकार द्वारा जम्मू–कश्मीर में अलगाववादी नेताओं सहित ऐसी ही भारत विरोधी बात करने वाले तथा अन्य कुल 173 लोगों की सुरक्षा वापस लिए जाने के निर्णय का जिस तरह देश भर में स्वागत हुआ उससे समझा जा सकता है कि इनको लेकर लोगों की भावनायें क्या हैं। हालांकि पिछले 17 फरबरी को जम्मू–कश्मीर प्रशासन ने केवल पांच हुर्रियत नेताओं की सुरक्षा वापसी का फैसला किया था और उसे ही पूरे देश में सराहा गया था। वैसे उसी समय साफ हो गया था कि कुछ ही दिनों में इसका वस्तार होगा। जम्मू कश्मीर प्रशासन का बयान था कि जिनकी सुरक्षा हटाई गई है उसके अलावा भी अगर किसी अलगाववादी को किसी तरह की पुलिस सुरक्षा है तो पता लगने के बाद उन्हें भी वापस किया जाएगा। साथ ही अगर उन्हें सरकार के द्वारा कोई दूसरी सुविधाएं मिल रही हैं तो वे भी तत्काल हटा ली जाएंगी। अब अलगाववादी नेताओं सैयद अली शाह गिलानी,मौलवी मीरवाइज उमर फारूक, अब्दुल गनी भट, बिलाल लोन, यासिन मलिक, हाशिम कुरैशी, शब्बीर शाह जैसों की सुरक्षा और सरकारी वाहनों की सुविधायें खत्म हो गई हैं। जिन लोगों के सुरक्षा वापस लिए गए उनमें ज्ञात 23 चेहरे हुर्रियत के हैं प्रशासन के बयान को देखें तो किसी और अलगावादी को प्राप्त सरकारी सुरक्षा या सुविधाएं हासिल रह गई हों तो राज्य पुलिस मुख्यालय इसकी समीक्षा करेगा और इसे तुरंत वापस ले लिया जाएगा। पूरे देश से यह मांग लंबे समय से थी कि जो नेता भारत को तोड़ने के लिए अभियान चलाते हैं, अपने को भारत का नागरिक तक नहीं कहते, कुछ स्वयं विवादास्पद क्षेत्र का नागरिक कहते हैं तो कुछ स्वयं को पाकिस्तानी... उनको भारत की ओर से मिलने वाली हर तरह की सुरक्षा और सुविधा समाप्त करनी चाहिए। इन जवानों की शहादत के बाद जिस तरह का गुस्सा देश में है उसको देखते हुए यह कदम लाजिमी हो गया था। यह समय ऐसा है जब इसका सार्वजनिक विरोध करना उनके लिए भी आसान नहीं होगा जो हुर्रियत नेताओं के प्रति सहानुभूति रखते हैं। इनके जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्रियों उमर अब्दुल्ला और मेहबूबा मुफ्ती ने इसका विरोध कर ही दिया। कांग्रेस के नेता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री सैफुद्दीन सोज भी इस कदम के खिलाफ आ गए। पूरा देश जानता है कि हुर्रियत नेता खुलकर आतंकवादियों के पक्ष में बयान नहीं देते, पर किसी आतंकवादी हिंसा की निंदा करते हुए उन्हें नहीं सुना गया। उल्टे वे सुरक्षा बलों को खलनायक साबित करते हैं। वे आतंकवादियों के खिलाफ सुरक्षा बलों की कार्रवाई का हमेशा विरोध करते हैं। आतंकवादियों के जनाजे में वे शामिल होते हैं और भारत विरोधी नारे लगवाते हैं। इन्होंने कभी पत्थरबाजों की आलोचना नहीं की लेकिन सुरक्षा बल जब इनके विरुद्ध पैलेट गन या आंसूगैस का इस्तेमाल करते हैं तब ये जरुर आसमान सिर पर उठा लेते हैं। अगर सोज को इसमें हिंसा का समर्थन नहीं दिखता तो उनको अपना चश्मा बदल लेना चाहिए। कांग्रेस को उनसे पूछना चाहिए कि हुर्रियत के प्रति उनके प्रेम का कारण क्या है? वैसे भी एनआईए द्वारा आतंकवाद को वित्त पोषण करने के आरोप में हुर्रियत नेताओं के गिरफ्तार होने के बाद इस तरह का बयान आपत्तिजनक है।

हालांकि सुरक्षा हटाने के फैसले के बाद मीरवाइज उमर फारूक के नेतृत्व वाले हुर्रियत कांफ्रेस ने कहा है कि सरकार ने खुद ही उन सबको सुरक्षा मुहैया कराने का फैसला किया था, जिसकी कभी मांग नहीं की गई। उमर फारूक और प्रो अब्दुल गनी बट तो आरोप लगा रहे हैं कि इस सुरक्षा को भारतीय एजेंसियां कश्मीर की आजादी पसंद तंजीमों और उनके नेताओं को बदनाम करने के लिए ही इस्तेमाल करती रहीं हैं। इसके जरिए हमारी गतिविधियों की निगरानी की जाती थी। अब्दुल गनी बट ने कहा कि उन्हें राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सुरक्षा की कोई जरूरत नहीं है। बहुत अच्छा। आपकी चाहत सरकार ने पूरी कर दी है। लेकिन कुरैशी का कहना है कि सुरक्षा हटाने के बाद आईएसआई मुझे निशाना बनाएगी क्योंकि मैं कश्मीर की आजादी की बात करता हूं, पाकिस्तान में मिलाने का नहीं। कुरैशी का बयान यह साबित करता है कि फारुख या बट जो बोल रहे हैं वह सच नहीं है। इस कदम से हुर्रियत नेता परेशान है, उनकी चिंता बढ़ी है। यह स्वाभाविक भी है। मीरवायज का ही उदाहरण लीजिए। उनको जेड प्लस सुरक्षा मिली हुई थी। उन्हें बुलेट प्रूफ वाहन भी दिया गया। लेकिन वर्ष 2017 में जामिया मस्जिद में ईद से कुछ दिन पहले एक डीएसपी को जब भीड़ ने पीटपीटकर मार डाला तो उनकी सुरक्षा में कटौती कर दी गई। डीएसपी को हटाकर सुरक्षा की कमान एक इंस्पेक्टर रैंक के अधिकारी को दी गई। इसी तरह अन्यों को भी अलग–अलग श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त थी। यह प्रश्न भी लंबे समय से उठ रहा था कि आखिर जनता का धन इन भारत विरोधियों पर क्यों खर्च किया जाना चाहिए? इनकी सुरक्षा पर होने वाले खर्च के अलग–अलग आंकड़े आए हैं और इसका बड़ा कारण यह है कि राज्य सरकारें हर वर्ष इसका ऐसा आंकड़ा बनाती थी ताकि ऐसा न लगे कि काफी बड़ी राशि इन पर खर्च हो रही है। पिछले वर्ष फरवरी में जम्मू–कश्मीर विधानसभा में पेश रिपोर्ट के अनुसार अलगाववादी नेताओं की सुरक्षा पर 10.88 करोड़ रुपए सलाना खर्च किए गए। उमर फारूख की सुरक्षा पर एक दशक में 6 करोड़ से ज्यादा खर्च की जानकारी सरकार ने दीं। प्रो अब्दुल गनी बट की सुरक्षा पर एक दशक में 2.34 करोड़, बिलाल गनी लोन पर इस 1.65 करोड़ और हाशिम कुरेशी की सुरक्षा पर भी करीब डेढ़ करोड़ खर्च किए गए। कोई भी समझ सकता है ये आंकड़े सच नहीं हो सकते। इस फैसले के पूर्वराज्य में 25 लोगों को जेड प्लस तथा करीब 1200 लोगों के पास अलग–अलग श्रेणी की सुरक्षा मिली हुई थी। साफ है कि इन सबकी गहन समीक्षा की गई तो कई अलगाववादी और उनकी श्रेणी के सामने आ गए। अलगाववादी भाषा बोलते हुए भारतीय प्रशासनिक सेवा को त्यागकर राजनीति में आने वाले शाह फैजल और वाहिद पर्रे जैसे लोग इसी श्रेणी में आते हैं। किंतु ऐसा न हो कि सुरक्षा वापसी का कदम यही तक सीमित रह जाए। इसके अलावा भी सरकार अलगाववादियों के महंगे इलाज से लेकर बाहर जाने पर होटलों में ठहरने का तक व्यय वहन करती रहीं हैं। जब ये दिल्ली आते हैं तो नामी महंगे होटलों में ठहरते हैं। यहां तक कि कश्मीर के कई होटलों में इनके लिए स्थायी रुप से कमरा बुक रहता है। पता नहीं इतनी सुविधा इनको क्यों मिली हुईं थीं? इसके अलावा सरकार इनके महंगे इलाज से लेकर बाहर जाने पर होटलों में ठहरने का तक व्यय वहन करती रहीं हैं। जब ये दिल्ली आते हैं तो नामी महंगे होटलों में ठहरते हैं। कश्मीर के कई होटलों में इनके लिए स्थायी रुप से कमरा बुक रहता है। पता नहीं इतनी सुविधा इनको क्यों मिली हुईं थीं?

वास्तव में हुर्रियत नेता जिस तरह भारत में भारत विरोधी गतिविधियां चलाते हुए सुख–वैभव और सारी सुविधाओं के साथ निश्चिंत रहते रहे हैं वह हर भारतवासी की छाती में शूल की तरह चुभता है। पाकिस्तान से हवाला के जरिए आतंक को बढ़ावा देने के लिए धन लेने का प्रमाण मिलने के बाद एनआईए ने मामला दर्ज कर दस को गिरफ्तार किया है। यह बात अलग है कि इनमें शब्बीर शाह को छोड़कर कोई बहुत बड़ा नाम इनमें नहीं है। इनकी स्थिति तो ऐसी बना दी जानी चाहिए थी कि ये भारत विरोध का शब्द मुंह से निकालने के पहले सौ बार सोचते। सुरक्षा कवच हटाना सही है , पर यह मात्र एक कदम है। उनके खिलाफ बहुस्तरीय जांच हो जिनमें उनकी गतिविधियों से लेकर संपत्तियां भी शामिल हों। क्या पाकिस्तान से आने वाली राशि का उपयोग केवल वे लोग ही करते थे जिन्हें एनआईए ने गिरफ्तार किया? ये अलगावादी इतने शान ओ शौकत में रहते कैसे हैं? इनके पास अकूत संपत्ति है जिनमें स्कूल, होटल, मकान–प्लॉट सब कुछ है। यासीन मलिक 1990 के आसपास रेहड़ी चलाकर गुजारा चलाता था। आज वह श्रीनगर के सबसे महंगे बाजार लालचौक इलाके की दो तिहाई से भी ज्यादा संपत्ति का मालिक है। इसकी कीमत 150 करोड़ से ज्यादा है। यहां रेजीडेंसी होटल भी इसी का है। शब्बीर शाह का पहलगाम में होटल है। एनआईए ने डोजियर में अलगाववादी नेताओं की उन नामी–बेनामी संपत्तियों का विवरण दिया है जो इसकी पकड़ में आए। इसके अनुसार शब्बीर शाह के पास करीब 19 प्रॉपर्टीज हैं। सैयद अली शाह गिलानी की अधिकांश संपत्ति इसके दो बेटों के नाम है। इसमें प्लॉट, स्कूल, मकान आदि हैं। बड़े 20 अलगाववादी नेताओं के पास करीब 200 प्रॉपर्टी बेनामी भी हैं। अलगाववादियों की भारत विरोधी गतिविधयों पर आघात करना है तो सबकी संपत्तियों की एक बार जांच कराकर बेनामी संपत्ति कानून के तहत इनको जब्त किया जाए, आय से अधिक संपत्ति का मुकदमा दर्ज हो और धनशोधन का मामला तो अपने आप बन ही जाता है।

—ई: 30, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली: 110092,
दूरभाष:01122483408, 9811027208

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को ज्ञापन

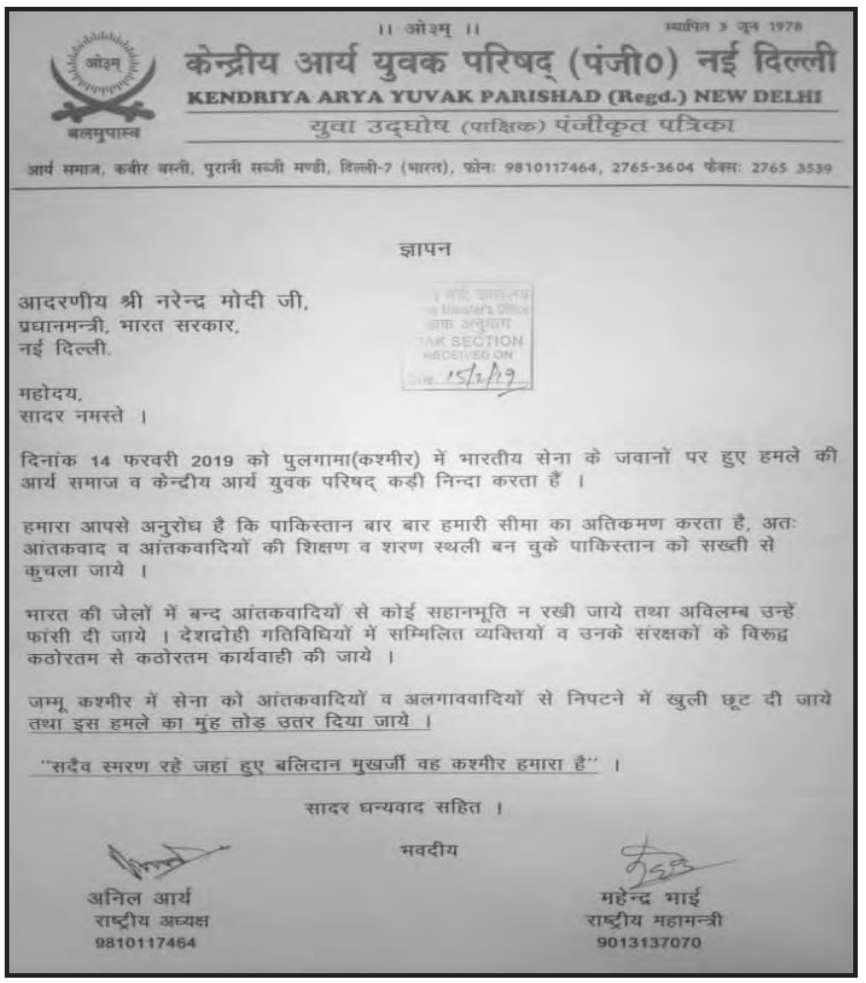

।। ओ३म् ।। स्थापित 3 जून 1978

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी०) नई दिल्ली
KENDRIYA ARYA YUVAK PARISHAD (Regd.) NEW DELHI
युवा उद्घोष (पाक्षिक) पंजीकृत पत्रिका

आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-7 (भारत), फोन: 9810117464, 2765-3604 फैक्स: 2765 3539

ज्ञापन

आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी,
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली.

PMK SECTION RECEIVED ON 15/2/19

महोदय,
सादर नमस्ते ।

दिनांक 14 फरवरी 2019 को पुलगामा(कश्मीर) में भारतीय सेना के जवानों पर हुए हमले की आर्य समाज व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् कड़ी निन्दा करता हैं ।

हमारा आपसे अनुरोध है कि पाकिस्तान बार बार हमारी सीमा का अतिकमण करता है, अतः आतंकवाद व आंतकवादियों की शिक्षण व शरण स्थली बन चुके पाकिस्तान को सख्ती से कुचला जाये ।

भारत की जेलों में बन्द आंतकवादियों से कोई सहानभूति न रखी जाये तथा अविलम्ब उन्हें फांसी दी जाये । देशद्रोही गतिविधियों में सम्मिलित व्यक्तियों व उनके संरक्षकों के विरुद्ध कठोरतम से कठोरतम कार्यवाही की जाये ।

जम्मू कश्मीर में सेना को आंतकवादियों व अलगाववादियों से निपटने में खुली छूट दी जाये तथा इस हमले का मुंह तोड़ उत्तर दिया जाये ।

"सदैव स्मरण रहे जहां हुए बलिदान मुखर्जी वह कश्मीर हमारा है" ।

सादर धन्यवाद सहित ।

भवदीय

अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
9810117464

महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामन्त्री
9013137070

(पृष्ठ 2 का शेष)

की चेतना में तनिक भी अन्तर नहीं आया। वे बराबर ''ओ३म् विश्वानि देव सवितर .....'' इत्यादि और गुरु मन्त्र का पाठ करते रहे। उस समय उन को न घरवालों की चिन्ता थी, न घातक पर अप्रसन्नता और न मौत का डर था।" पंण्डित जी ने प्राण त्यागने से पूर्व अपने सहधर्मी मित्रों को अन्तिम आदेश यह दिया ''आर्यसमाज से लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिए।" पंडित जी ने प्राणपण से वैदिक धर्म और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया और इसी के लिये अपने प्राणों की आहुति भी दी। पण्डित जी के अन्तिम संस्कार में लाहौर में तीस हजार लोगों ने अपने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। पंडित लेखराम जी के गुण, कर्म व स्वभाव का वर्णन करते हुए पं. भवानी प्रसाद जी ने कहा है कि वह अत्यन्त त्यागी, सरल स्वभाव, प्रतिज्ञा पालन के पक्के, तेजस्वी, मन्युप्रवण, आर्य सिद्धान्त के अटल विश्वासी, अकुतोभय, वाक्पटु, सुलेखक और आदर्श धर्मप्रचारक थे। उनके रक्तबिन्दु पृथिवी पर व्यर्थ नहीं गिरे। उन्होंने सोमनाथ, वजीरचन्द, मथुरादास, तुलसीराम, सन्तराम, योगेन्द्रपाल, जगतसिंह आदि अनेक धर्माग्नि से प्रज्वलित हृदय वाले भावुक धर्मोपदेशक उत्पन्न किये थे और आशा है कि वे आगे भी ऐसे ही अदम्य उत्साह से परिपूर्ण प्रचारकों को जन्म देते रहेंगे। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हुए पं. लेखराम जी के बलिदान पर हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ओ३म् शम्।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोन:09412985121

गाजियाबाद में आंतकवाद विरोधी दिवस सम्पन्न

रविवार, 24 फरवरी 2019, आर्य समाज, वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद व आर्य परिवार वृन्दावन ग्रीन के तत्वावधान में भारातीय सेना पर हमले के विरूद्व आंतकवाद विरोधी दिवस मनाया गया व आचार्य महेन्द्र भाई के ब्रह्मत्व में राष्ट्र रक्षा यज्ञ सम्पन्न हुआ। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि अब शहीदों के खून का बदला खून से लेने का समय आ गया है, केन्द्र सरकार को पाकिस्तान पर हमला करके उसे सबक सिखाना चाहिये। इस अवसर पर आर्य नेता मायाप्रकाशत्यागी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी अखिलानन्द जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, ज्ञानेन्द्र आर्य,प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), प्रवीन आर्या (दिल्ली) आदि ने अपने विचार रखे। कुशल संचालन प्रमोद चौधरी व सुरेश आर्य ने किया। देवेन्द्र आर्य, ओमेन्द्र आर्य, सतेन्द्र आर्य, यशोवीर आर्य, सौरभ गुप्ता, शिवम मिश्रा के पुरूषार्थ से कार्यक्रम सफल रहा। तिरंगा यात्रा का भी भव्य आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ता भारी संख्या में सम्मिलित हुए।

इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती का धरना व श्री निवासपुरी का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

शनिवार, 23 फरवरी 2019, इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, दिल्ली के तत्वावधान में श्री रामशरण गौड की अध्यक्षता में पुलवामा हमले के विरूद्व नई दिल्ली के राजघाट पर प्रदर्शन किया गया। आर्य समाज की ओर से परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य, जयसिंह आर्य जय, सुनीता बुग्गा, प्रवीन आर्या आदि सम्मिलित हुए। प्रवीन आर्य ने मंच संचालन किया। द्वितीय चित्र–रविवार, 17 फरवरी 2019, आर्य समाज, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ, परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य व प्रवीन आर्या को सम्मानित करते प्रधान ओ.पी.वर्मा,मन्त्री सुशील आर्य, स्थानीय विधायक अवतारसिह कालका व अनिल हान्डा आदि।

राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन, पंजाबी बाग, दिल्ली में प्रवीन आर्या व अनिल आर्य का स्वागत करते आर्य नेत्री आदर्श सहगल, उर्मिला आर्या,सुनीता बुग्गा,ललिता मेहता,अनिता कुमार व डा.सुषमा आर्या।

आर्य गायक नरेन्द्र आर्य 'सुमन' का स्वागत करते आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, अनिल आर्य, सुरेश आर्य, विनोद गुप्ता आदि। द्वितीय चित्र–रविवार, 24 फरवरी 2019, आर्य समाज,उत्तम नगर, दिल्ली के ''दयानन्द दशमी'' समारोह में अनिल आर्य के साथ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य भारद्वाज पाण्डेय, सेवक जगवानी, गायक अकिंत आर्य, मंत्री अमरसिंह सहरावत, ओमवीरसिंह, योगी जी, सुखवीरसिंह आर्य, हरीश आर्य आदि। प्रधान राजकुमार भाटिया ने आभार व्यक्त किया।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटोली पंहुचो

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दिनांक 9 व 10 मार्च 2019(शनि. व रविवार) को ग्राम टिटोली,रोहतक में मनाया जा रहा है । सभी आर्य युवक/आर्य जन हजारों की संख्या में पंहुचे –स्वामी आर्यवेश, प्रधान

आर्य जनता का विश्वास है हमारे साथ!!!

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1.श्रीमती विद्यावन्ती आनन्द (माता राजेन्द्र आनन्द) का निधन।
2.श्रीमती रामदेवी चांदना (माता तिलक चांदना, सी.ए.) का निधन।
3.श्रीमती शान्तिदेवी रहेजा (आर्य समाज, रोहिणी) का निधन।
4.श्रीमती मनमोहिनी गुप्ता (धर्मपत्नि हीरालाल गुप्ता) का निधन।
5.श्री लक्ष्मीचन्द्र अरोड़ा (पिता राजन अरोड़ा, करनाल) का निधन।
6.श्री देवकीनन्दन गुप्ता (मुरादाबाद) का निधन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970